



पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 12

अंक : 5

जनवरी, 2025

मूल्य : ₹2.00



। पशुधन नित्य सर्वलोकपोषकायम् ।

मार्गदर्शन : कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित

कुलपति सन्देश

ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए पशुधन विकास महत्वपूर्ण आधार: कुलपति

नूतन वर्ष-2025 के शुभ आगमन पर सुख, शांति और समृद्धि में अभिवृद्धि की मंगल कामना के साथ मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भारत एक कृषि प्रधान देश है और पशुपालन क्षेत्र इसका एक अभिन्न अंग है। पशुधन को सामान्य तौर पर ग्रामीण आजीविका के लिए एक प्रमुख स्रोत माना जाता है। महिलाओं का योगदान पशुपालन क्षेत्र में सराहनीय है। महिलाएं घर का सम्पूर्ण कार्य करते हुए भी गाय, भैंस, बकरी, भेड़, सूअर, मुर्गी, खरगोश आदि से सम्बन्धित पशुपालन का कार्य आसानी से कर लेती हैं। विकासशील देशों में कृषि श्रम-शक्ति का औसत 43 प्रतिशत भाग महिलाएं ही हैं। यह अनुमान है कि वैश्विक स्तर पर ग्रामीण महिलाएं कम आय वाले पशुपालकों के दो-तिहाई का प्रतिनिधित्व करती हैं। भारत में विशाल पशुधन है। देश में लगभग 2 करोड़ से भी अधिक लोग आजीविका के लिए पशुधन पर निर्भर हैं। पशुधन सीमान्त कृषकों/पशुपालकों की आय में 16 प्रतिशत का योगदान देता है। पशुधन लगभग 8.8 प्रतिशत आबादी को रोजगार भी प्रदान करता है। वर्ष 2022 में अन्तर्राष्ट्रीय डेयरी महासंघ, विश्व डेयरी शिखर सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि भारत के डेयरी क्षेत्र में लगभग 70 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी है तथा महिलाएं ही डेयरी क्षेत्र की असली कार्यकर्ता हैं। डेयरी सहकारी समितियों में एक तिहाई से अधिक सदस्य महिलाएं हैं। भारत की बढ़ती आबादी, बढ़ती आय और उभरते मध्यम वर्ग के कारण दूध, मांस, अण्डे जैसे पशुधन उत्पादों की मांग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इस कारण पशुधन क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। महिलाएं पशुधन क्षेत्र की महत्वपूर्ण कड़ी होते हुए भी महिलाओं के पास संसाधनों और तकनीकी सूचनाओं का अभाव रहता है। इसलिए वैज्ञानिक पशु आहार, संतुलित पशु आहार, पशु प्रजनन, पशु स्वास्थ्य देखभाल, पशु उत्पाद प्रसंस्करण और विपणन के क्षेत्रों में महिलाओं की क्षमताओं को बढ़ाने की आवश्यकता है। पशुपालन संस्थाओं को पशुपालन में नवीनतम तकनीकों पर प्रशिक्षण आयोजित कर महिलाओं को सशक्त बनाना चाहिए तथा इन प्रशिक्षणों में 60 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए, ताकि इस क्षेत्र में लैंगिक असमानता से निपटा जा सके तथा महिलाओं का विकास हो सके। देश में महिला समावेशी सहकारी समितियां अथवा अन्य उत्पादक संघ स्थापित करने चाहिए तथा नीति निर्माण प्रक्रियाओं में महिलाओं की भागीदारी भी सुनिश्चित होनी चाहिए। ग्रामीण महिलाओं में सशक्तिकरण के लिए पशुधन क्षेत्र में महिलाओं की औपचारिक भागीदारी और निर्णय लेने की शक्तियों को बढ़ावा देना चाहिए। पशुधन क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण अर्थात् महिलाओं को पुरुषों के समान अवसर देने से गरीब क्षेत्रों में कृषि उत्पादन 2.5 से 4 प्रतिशत तक बढ़ सकता है तथा कुपोषित लोगों की संख्या 12 से 17 प्रतिशत तक कम हो सकती है। पशुपालन क्षेत्र में महिलाओं के सशक्तिकरण द्वारा न केवल पारिवारिक पोषण को पूर्ण करने में मदद मिलेगी, वरन् यह रोजगार सृजन एवं स्त्री-पुरुष की समान भागीदारी भी सुनिश्चित करेगी तथा सामाजिक विकास में भी योगदान दे पायेगी।

आचार्य मनोज दीक्षित



किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

—महात्मा गांधी



विश्वविद्यालय समाचार

राज्य सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन

राज्य सरकार के कार्यकाल के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में दिनांक 12-14 दिसम्बर, 2024 को रवीन्द्र रंगमंच, बीकानेर में जिला स्तरीय आयोजित प्रदर्शनी में प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास द्वारा विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी के दौरान विश्वविद्यालय द्वारा गत एक वर्ष के राज्य सरकार की विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यों को पोस्टर के माध्यम से प्रदर्शन किया गया। उद्घाटन अवसर पर बीकानेर (पूर्व) की विधायिका सुश्री सिद्धि कुमारी ने विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी स्टोल का अवलोकन किया और विश्वविद्यालय के कार्यों की सराहना की। जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि ने भी विश्वविद्यालय द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी स्टोल का अवलोकन किया और विश्वविद्यालय की गतिविधियों को जाना। दिनांक 13 दिसम्बर को चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री राजस्थान सरकार श्री गजेंद्र सिंह खीवसर ने विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी स्टोल का अवलोकन किया और विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालकों एवं किसानों के हितार्थ किए जाने वाले कार्यों की जानकारी ली। विधायक खाजूवाला विश्वनाथ मेघवाल, विधायक कोलायत अंशुमान सिंह भाटी, जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि, अतिरिक्त जिला कलेक्टर (प्रशासन) डॉ. दुलीचंद मीना, अन्य प्रशासनिक अधिकारियों एवं पशुपालकों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। प्रदर्शनी के आयोजन में सह-आचार्य प्रसार शिक्षा डॉ. देवीसिंह और सहायक निदेशक प्रसार डॉ. संजय सिंह का सहयोग रहा।



वैटरनरी विश्वविद्यालय को हासिल हुआ पेटेंट

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर को अभिनव कॉस्मेटिक उत्पाद पर पेटेंट प्रदान किया गया है। पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय नवानियां (उदयपुर) के एनाटॉमी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. हेमन्त जोशी द्वारा सिरोही बकरी के दूध और प्राकृतिक तेलों जैसे जैतून, नारियल, करंज, और अरंडी के तेलों के संयोजन से अनूठे फार्मूले को विकसित कर कॉस्मेटिक उत्पाद बनाया गया जिसको भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा "प्रसाधन सामग्री संघटन एवं प्राप्त करने की प्रक्रिया (कॉस्मेटिक कंपोजिशन एण्ड प्रोसेस टू ऑब्टेन देयरऑफ)" विषय पर राजुवास को पेटेंट प्रदान किया गया है जो कि 24 अप्रैल 2020 से 20 वर्षों को अवधि के लिए मान्य होगा। डॉ. जोशी ने बताया कि ये अविष्कार नेचुरल पदार्थों के संयोजन से तैयार किया गया है जो कि सिंथेटिक कॉस्मेटिक उत्पादों से होने वाले दुष्प्रभावों को कम करने में सहायक होगा। वैटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने राजुवास परिवार एवं पेटेंट शोध की पूरी टीम को बधाई देते हुए कहा कि आज समाज को गुणवत्तापूर्ण शोध की आवश्यकता है। हमारे शोध का सीधा-सीधा लाभ आमजन एवं पशुपालकों को पहुंचाना ही हमारा उद्देश्य है। वैटरनरी विश्वविद्यालय के कई अन्य शोध भी पेटेंट हेतु प्रक्रियाधीन है, जिनकी शीघ्र हासिल होने की संभावना है।

विजय भवन पैलेस के शताब्दी दिवस के अवसर पर हुई विधिवत पूजा अर्चना

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय बीकानेर के परिसर में स्थित विजय भवन पैलेस की स्थापना 5 दिसम्बर को शताब्दी दिवस के रूप में मनाया गया। वैटरनरी महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त दाधीच ने बताया कि 5 दिसम्बर को विजय भवन पैलेस के शताब्दी दिवस के अवसर पर विधिवत पूजा अर्चना कार्यक्रम रखा गया तथा परिसर में स्थित कुंवर बिजय सिंह जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। विजय भवन पैलेस का बीकानेर के तत्कालीन महाराजा गंगासिंह जी ने अपने पुत्र महाराज कुंवर विजय सिंह जी बहादुर के निजी आवास हेतु बनवाया जो कि शिलालेख में भी वर्णित है। विधिवत पूजा अर्चना के दौरान सभी जन मानस एवं जीव जन्तुओं हेतु कल्याण के भाव के साथ इष्ट देवी देवताओं की स्तुति की गई। प्रो. दाधीच ने बताया कि पशुकल्याण हेतु बीकानेर राजपरिवार द्वारा विश्वविद्यालय को प्रदत्त इस ऐतिहासिक एवं अमूल्य धरोहर के संरक्षण हेतु विश्वविद्यालय हर संभव प्रयास करेगा। पूजा कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के डीन-डॉरेक्टर एवं फैकल्टी सदस्य मौजूद रहे।





शासन सचिव पशुपालन डॉ. समित शर्मा ने किया विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाईयों का निरीक्षण

विश्वविद्यालय में उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग अधिक से अधिक पशुपालकों एवं किसानों के हितार्थ कार्य करें : डॉ समित शर्मा

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में शासन सचिव पशुपालन, गोपालन एवं डेयरी, राजस्थान सरकार, डॉ. समित शर्मा ने 19 दिसम्बर को विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाईया का भ्रमण कर निरीक्षण किया। प्रति-कुलपति एवं अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय प्रो. हेमन्त दाधीच ने बताया कि शासन सचिव, पशुपालन, डॉ. समित शर्मा ने वेटरनरी महाविद्यालय के शल्य चिकित्सा इकाई, क्लिनिकल कॉम्प्लेक्स, इनडोरवार्ड, पशुधन अनुसंधान फार्म, मिनरल मिक्सचर इकाई व अन्य विभागों का निरीक्षण किया एवं विश्वविद्यालय में चल रही गतिविधियों की जानकारी हासिल प्राप्त की। अधिष्ठाता प्रो. दाधीच ने विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, शोध, प्रसार एवं प्रशासनिक गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। डॉ. समित शर्मा ने सभी को सम्बोधित करते हुए कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय में संसाधन एवं सुविधाएं काफी व्यापक है। कर्मचारियों को पूरी लग्न एवं उद्देश्यों के साथ कार्य करना होगा। डॉ. समित शर्मा ने वेटरनरी क्लिनिकल कॉम्प्लेक्स का निरीक्षण किया एवं कहा कि वेटरनरी हॉस्पिटल में उपलब्ध चिकित्सकीय संसाधनों का पूर्ण उपयोग करें व सभी उपकरणों को क्रियाशील स्थिति में रखें आई.सी.यू. सुविधा का विकास कर क्लिनिक को रेफरल हॉस्पिटल के रूप में विकसित करें ताकि अधिक से अधिक पशुओं को चिकित्सकीय सुविधा मिल सके। डॉ. शर्मा ने मिनरल मिक्सचर यूनिट की कार्य प्रणाली की सराहना की एवं मिनरल मिक्सचर का विश्वविद्यालय के पशु विज्ञान केन्द्रों, कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं अन्य इकाईयों के माध्यम से प्रभावी मार्केटिंग सुनिश्चित करवाने का सुझाव दिया। डॉ. शर्मा ने पशुपालन विभाग एवं विश्वविद्यालय को एक इकाई के रूप में कार्य करते हुए संयुक्त प्रयासों पर बल देने का सुझाव दिया ताकि पशुचिकित्सा एवं प्रसार सेवा का लाभ पूरे राज्य में किसानों को मिल सके। डॉ. शर्मा ने वेटरनरी के व्यापक क्षेत्र की परिचर्चा करते हुए कहा कि हमें विशिष्ट से अति-विशिष्ट चिकित्सकीय कौशल के बारे में प्रयास करने होंगे ताकि विश्वविद्यालय को देश में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में अपने गुणवत्तापूर्ण कार्यों की वजह से विशेष पहचान मिले। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने कहा कि विश्वविद्यालय पशुधन संरक्षण, उन्नयन एवं रोग निदान हेतु हमेशा से ही प्रयासरत रहा है। आचार्य दीक्षित ने डॉ. शर्मा द्वारा विश्वविद्यालय को श्रेष्ठतम श्रेणी में लाने हेतु दिये गये विभिन्न सुझावों एवं निर्देशों की पालना सनिश्चित करवाने हेतु आश्वस्त किया। निदेशक पशुपालन विभाग डॉ. भवानी सिंह राठौड़ ने कहा कि मुझे वेटरनरी महाविद्यालय का एल्युमुनाई होने के नाते गर्व महसूस होता है। इस महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी विभिन्न उच्च पदों पर कार्य करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है। कार्यक्रम के दौरान डॉ. समित शर्मा उत्कृष्ट कार्य हेतु फैकल्टी सदस्यों को सम्मानित भी किया। कार्यक्रम की समाप्ति पर अधिष्ठाता रत्नगढात्तर अध्ययन डॉ. राजेश कुमार धूड़िया ने सभी का धन्यवाद दिया। डॉ. समित शर्मा ने महाविद्यालय परिसर में पौधारोपण भी किया। बैठक के दौरान निदेशक पशुपालन विभाग डॉ. भवानी सिंह राठौड़, आर.ए.एस. शासन उप सचिव, पशुपालन विभाग श्रीमती संतोष करोल, अतिरिक्त निदेशक, उत्पादन एवं प्रसार, निदेशालय पशुपालन विभाग डॉ. प्रवीण कुमार सेन, संयुक्त निदेशक मोबाइल वेटरनरी यूनिट, निदेशालय पशुपालन विभाग डॉ. हेमन्त पंत, वरिष्ठ पशु चिकित्सा अधिकारी, एपिडेमियोलॉजी, निदेशालय पशुपालन विभाग डॉ. पुरुषोत्तम शर्मा, पशु चिकित्सा अधिकारी गोपालन विभाग डॉ. प्रवीण कुमार कौशिक, विश्वविद्यालय के वित्त नियन्त्रक बी.एल. सर्वा सहित विश्वविद्यालय के डीन-डॉरेक्टर, अधिकारी एवं पशुपालन विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।



शासन सचिव, पशुपालन विभाग ने किया पीवीके, रतनगढ का निरीक्षण

शासन सचिव पशुपालन, गोपालन एवं डेयरी, राजस्थान सरकार डॉ. समित शर्मा ने 19 दिसम्बर को पशु विज्ञान केन्द्र रतनगढ (चूरु) का निरीक्षण कर विभिन्न प्रसार कार्यों की जानकारी ली एवं पशुपालकों हेतु तकनीकी हस्तांतरण एवं रोग निदान सेवाएं सुदृढ़ करने हेतु सुझाव दिये। इस दौरान मुख्य: अन्वेषक पशु विज्ञान केन्द्र डॉ. देवीसिंह एवं प्रभारी पशुविज्ञान केन्द्र डॉ. अशोक कुमार मौजूद रहे।





यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी

गांव कतरियासर में स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के तहत डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर द्वारा गोद लिए गांव कतरियासर में 24 दिसम्बर को प्रभारी आयुष्मान आरोग्य मंदिर (कतरियासर) डॉ. प्रेमराम के निर्देशन में शिविर का आयोजन राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में किया गया। शिविर के दौरान 126 छात्राओं का स्वास्थ्य जांच कर मौसमी बीमारियों से बचाव हेतु सुझाव दिए गए आवश्यकता अनुसार दवाइयों का वितरण भी किया गया। प्रभारी आयुष्मान आरोग्य मंदिर (कतरियासर) डॉ. प्रेमराम ने छात्राओं को रक्त की कमी, कुपोषण से होने वाली बीमारियों इत्यादि के बचाव एवं उपचार के बारे में जागरूक किया। चिकित्सा शिविर का प्रबंधन डॉ. सुनील कुमार, सहायक आचार्य डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर ने किया। इस शिविर के आयोजन में डॉ. दिवाकर चौधरी, गीता वर्मा, प्रधानाचार्य, राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, सहीराम तरड़, शिखा सेन आदि का सहयोग रहा।



गांव बम्बलू में स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के तहत पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर द्वारा गोद लिए गांव बम्बलू में 30 दिसम्बर को प्रभारी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (बम्बलू) डॉ. समीर पंवार के निर्देशन में शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के दौरान 84 ग्रामवासियों की स्वास्थ्य जांच कर मौसमी बीमारियों से बचाव हेतु सुझाव देकर आवश्यकता अनुसार दवाइयों का वितरण भी किया गया। डॉ. पंवार ने ग्रामवासियों को रक्त की कमी, कुपोषण से होने वाली बीमारियों इत्यादि के बचाव एवं उपचार के बारे में जागरूक किया। चिकित्सा शिविर का प्रबंधन डॉ. मैना कुमारी, समन्वयक यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी, राजुवास, बीकानेर के द्वारा किया। इस शिविर के आयोजन में जितेंद्र सिंह (नर्सिंग अधिकारी), डॉ. सनी पंकज, डॉ. जगदीश, ग्राम सरपंच सुमित्रा देवी, हेतराम कुकणा, ग्राम विकास अधिकारी राजाराम चौधरी आदि ग्रामवासियों का सहयोग रहा।



गांव खतेपुरा में जागरूकता अभियान

पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर द्वारा युनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के तहत अंगीकृत गांव खतेपुरा में दिनांक 28.12.2024 को मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना के लिये जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। इस अभियान में युनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. संजय कुमार रेवानी तथा पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग के स्नातक तथा स्नातकोत्तर विद्यार्थियों डॉ. रोहिताश कुमार, डॉ. रोमक, डॉ. मनोज कुमार तथा डॉ. योगेश कुमार ने लोगों के बीच जाकर उन्हें इस योजना के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने इस योजना के लिये पशुपालकों की योग्यता, आवेदन के तरीके तथा योजना पंजीकरण हेतु आवश्यक दस्तावेजों से संबंधित जानकारीयों लोगों से साझा की। उन्होंने लोगों को इस योजना से अधिक से अधिक लाभ लेने के लिये प्रेरित भी किया। खतेपुरा गाँव के सरपंच प्रतिनिधि श्री दीपक कुमार मीणा ने इस कार्य में अपना बहुमूल्य सहयोग दिया।



रामपुरावास में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बरसी (जयपुर) द्वारा गोद लिये गये गांव रामपुरावास में दिनांक 30 दिसम्बर को चिकित्सा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन युनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. शफाअत खान, सहायक आचार्य द्वारा किया गया। इस स्वास्थ्य शिविर में उप जिला अस्पताल, बरसी के डॉ. ओमप्रकाश मीणा एवं सोनू मीणा, नर्सिंग अधिकारी के साथ श्री महेन्द्र कुमार, शिक्षण सहायक की सक्रिय भागीदारी रही। शिविर में ग्रामीणों की स्वास्थ्य सम्बन्धित आवश्यक जांचें कर मौसमी बीमारियों के बचने के उपाय बताये गये।



गांव-जोरजी का खेड़ा में जागरूकता अभियान

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानिश्यां (उदयपुर) द्वारा यूएसआर के तहत महाविद्यालय द्वारा अंगीकृत गांव जोरजी का खेड़ा में दिनांक 30 दिसम्बर को मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना के प्रति जागरूकता अभियान का आयोजन अधिष्ठाता प्रो. बलवंत एन. मिश्राम तथा डॉ. टीकम चन्द गोयल, समन्वयक, युनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के निर्देशन में किया गया। इस दौरान महाविद्यालय की यूएसआर टीम ने गांव के लोगों के बीच जाकर इस योजना के बारे में विस्तृत जानकारी देकर इस योजना से अधिक से अधिक लाभ लेने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में यूएसआर टीम के सदस्य डॉ. महेन्द्र मील के अलावा डॉ. हाकिम मंजर आलम तथा महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के अतिरिक्त श्री भगतसिंह, ग्राम विकास अधिकारी, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सहित ग्रामीणों ने अपना सहयोग दिया।





पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरु)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरु) द्वारा 5, 9, 12, 17, 23 एवं दिसम्बर 28 को गांव तोगावास, पूनसर, तोलासर, बायला, पुनसीसर एवं किकराली चर्नन गांवों में तथा 26 एवं 30 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 200 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 16, 20, 21, 23, 27 एवं 28 दिसम्बर को गांव नगला चाहर, दिदाबली, परमदरा, माघेरा, पास्ता एवं गुहाना गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 105 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 7, 12, 17 एवं 23 दिसम्बर को गांव रजौरा कला, सिधावली, सैमरा एवं चितौरा गांवों में तथा दिनांक 26 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 147 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 17 दिसम्बर को गांव ढाणी भोपालाराम में तथा 23 दिसम्बर को आयोजित केन्द्र परिसर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 60 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा दिनांक 20 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 19 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 9, 11, 13 एवं 18 दिसम्बर को गांव डिग्गी, घाटी, आमली एवं डूंगरी गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 94 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही द्वारा 12, 17, 20 एवं 24 दिसम्बर को गांव गोल, राजपुरा, वेलागई एवं मीरपुर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 78 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा 2, 5, 6, 9 एवं 18 दिसम्बर को गांव लुकास, सावराता, दुज्जार, कुसुम्बी एवं लेडी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 103 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा दिनांक 5, 6, 10, 12, 17 एवं 21 दिसम्बर को गांव रामखेड़ली, भोजपुरा, गामच, किशनपुरा, धर्मपुरा एवं खजुरी गांवों में तथा दिनांक 13 एवं 24 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 193 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 4, 5, 6, 7, 9, 12, 13 एवं 23 दिसम्बर को गांव केड़, भाटीवाड़, छावसरी, हुकमपुरा, महला की ढाणी, बगड़, खुडाना एवं बगतावरपुरा गांवों में तथा दिनांक 10 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 143 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 10, 24 एवं 26 दिसम्बर को गांव ढिलकी जाटान, अरडकी एवं घर्धेली गांवों में तथा दिनांक 17-20, 23 एवं 27-30 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 110 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।





पीपीआर भेड़ व बकरियों का एक घातक रोग : लक्षण व रोकथाम

पीपीआर भेड़ व बकरियों में होने वाला एक विषाणुजनित (वायरस) संक्रामक रोग है जिसे “बकरी महामारी” स््यूको रिन्डरपेस्ट, गोट प्लेग आदि नाम से भी जाना जाता है। एक अध्ययन के अनुसार पीपीआर रोग से भारत में बकरी पालन के क्षेत्र में करोड़ों रुपयों का नुकसान होता है जिसमें मृत्युदर प्रायः 50 से 80 प्रतिशत तक होती है। यह रोग मुख्य रूप से सर्दी के मौसम में होता है तथा यह रोग विशेषकर कम उम्र के मेमनों, कुपोषण व परजीवियों से ग्रसित बकरियों व भेड़ों में अति गंभीर व प्राणघातक सिद्ध होता है।

रोग कारक :-

यह रोग पैरामिक्सोविरिडी वायरस परिवार के मोर विल्ली नामक वायरस से होता है। इस फैमिली के वायरस से मानव जाति में खसरा रोग पैदा करने वाला विषाणु भी पाया जाता है।

रोग का प्रसार :-

पीपीआर का विषाणु आंसू, नाक, खांसी के स्राव और संक्रमित पशुओं के मल में आता है। इसलिए विशेष रूप से प्रभावित पशुओं में खांसी, छींक व उनके सम्पर्क में आने से फैलता है और जल, चारा और पशुओं के बैठने का बिछावन वायरस के प्रमुख स्रोत है। तनाव की स्थिति में जैसे परिवहन, गर्भावस्था, परजीविवाद व अन्य बीमारियों जैसी परिस्थितियों में यह रोग तेजी से होता है।

रोग के लक्षण :-

- ❖ रोग से प्रभावित पशु में अल्प अवधि में तेज बुखार आता है। (104°F - 106°F)।
- ❖ भूख कम लगना, जुगाली कम करना, अधिक प्यास व कमजोरी इस रोग के लक्षण है।
- ❖ रोगी के मुंह से लार गिरती है। मुंह के अन्दर, जीभ, होंठ तालु व मसूड़ों पर, खुरों के बीच छाले पड़ जाते हैं।
- ❖ दूध में गिरावट तथा गर्भित पशुओं में गर्भपात भी हो सकता है।
- ❖ नाक से स्राव आना, स्राव कई बार गाढ़ा व पीले रंग का हो जाता है। आंखों से निरंतर स्राव आता रहता है।
- ❖ रोग के समय पशुओं में निमोनिया भी हो जाता है तथा कई बार दस्त भी लगते हैं।
- ❖ यह बीमारी युवा पशुओं में ज्यादा गंभीर है और भेड़ के मुकाबले बकरी में अधिक तेजी से फैलती है।

रोग की जांच :-

पीपीआर वायरस का मुख और नाक के स्रावों की उचित प्रयोगशाला में जांच से बीमारी के लक्षण आने से पहले ही पता लगाया जा सकता है। अतः पीपीआर के लक्षण दिखते ही लार व नाक के स्रावों को प्रयोगशाला में जांच हेतु भेजना चाहिए।



रोग का उपचार :-

भेड़ व बकरियों में उल्टी, दस्त, बुखार के लक्षण आते हैं अतः पशु का लक्षणात्मक आधार पर उपचार शुरू करना चाहिए। पीपीआर का कोई विशेष उपचार नहीं है हांलाकि जीवाणु और परजीवी जटिलताओं को नियंत्रित करने के लिए दवाईयों का उपयोग पशुओं में मृत्युदर को कम कर सकता है। आंख, नाक व मुंह के घावों को दिन में दो बार साफ करना चाहिए इसके अलावा मुंह में छालों को 5 प्रतिशत बोरोग्लीसरीन से धो देना चाहिए।

टीकाकरण व रोकथाम :-

- ❖ पशुओं का समय पर टीकाकरण करवाये, पीपीआर का जीवित तनु टीका (Live Attenuated Vaccine) सफलतापूर्वक उपयोग में लाया जाता है। इसकी एक एमएल मात्रा सबक्यूटेनियस मार्ग द्वारा पशुओं में इस्तेमाल किया जाता है तथा एक से तीन वर्षा तक प्रतिरक्षा प्रदान करता है।
- ❖ रोगी पशुओं को अन्य स्वस्थ पशुओं से अलग कर देना चाहिए।
- ❖ बीमार पशुओं को बाहर चरने तथा पानी पीने के लिए खुला नहीं छोड़ना चाहिए।
- ❖ बाहर से लाये गये भेड़, बकरियों को कुछ दिनों तक झुण्ड से अलग रखना चाहिए तथा चारा, दाना, पानी भी अलग देना चाहिए।
- ❖ भेड़ बकरियों के रहने की जगह को साफ-सुथरा रखें।
- ❖ पशुओं के बाड़े में विषाणु, कीटाणु रोधक का इस्तेमाल करना चाहिए जैसे सोडियम कार्बोनेट, सोडियम हाइड्रोक्साइड, सोडियम हाइपोक्लोराइट आदि का छिड़काव करना चाहिए जिससे बीमारी को फैलने से रोका जा सकता है।
- ❖ बीमार बकरियों को पोषक, स्वच्छ, मूलायम, नम व स्वादिष्ट चारा खिलाना चाहिए।

डॉ. मनोहर सैन एवं डॉ. सीताराम गुप्ता

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर



भेड़ों में भी होती है चेचक (शीप पॉक्स)

भेड़ की चेचक एक गम्भीर और संक्रामक रोग है, जो भेड़ों में होने वाला त्वचा सम्बन्धी संक्रमण है। यह एक वायरल संक्रमण है जो विशेष रूप से पोक्सविरिडी परिवार के शीप पॉक्स वायरस द्वारा होता है। यह रोग मुख्य रूप से भेड़ों को प्रभावित करता है और बहुत तेजी से एक भेड़ से दूसरी भेड़ में फैलता है। यह रोग अन्य पशु जैसे बकरियों को भी प्रभावित कर सकता है। शीप पॉक्स वायरस अधिकतर अफ्रीका, एशिया, मध्य-पूर्व और भारत में पाया जाता है। हाल ही में स्पेन (2022), ग्रीस (2023) और बुल्गारिया (2023) में इस रोग के प्रकोप की सूचना मिली थी।

कारण: भेड़ की चेचक का कारण एक वायरस है जिसे शीप पॉक्स वायरस कहा जाता है। यह वायरस गंदगी से फैलते हैं, इसलिए पशुओं की स्वच्छता का खास ख्याल रखना जरूरी है। यह वायरस लार, नाक या दूध, मूत्र, मल, धूल, मिट्टी और त्वचा के घावों की पपड़ी में भी पाये जाते हैं। इसके अलावा संक्रमण उस स्थान पर भी फैल सकता है जहां संक्रमित भेड़े रहती हैं जैसे उनके बाड़े, पशुपालन स्थल आदि।

लक्षण: भेड़ की चेचक के लक्षण संक्रमण के बाद 3-7 दिनों के भीतर दिखाई देने लगते हैं। कुछ सामान्य लक्षण निम्नलिखित हैं।

- **बुखार:** संक्रमित भेड़ों को 40°C तक बुखार हो सकता है। यह बुखार अचानक बढ़ता है और भेड़ों को सुस्त बना देता है।
- **त्वचा पर चकते और फफोले:** सबसे सामान्य लक्षण त्वचा पर चकते का दिखाई देना है। ये चकते छोटे, लाल और खून के रंग के होते हैं। जैसे-जैसे संक्रमण बढ़ता है यह चकते फफोलों में बदल जाते हैं और वे सूजन, फफोले और खून बहने का कारण बन सकते हैं। ये फफोले शरीर के विभिन्न हिस्सों जैसे कि मुंह, गर्दन, कान, पीठ, पैरों और निचले अंगों पर दिखाई दे सकते हैं।
- **शरीर में दर्द और कमजोरी:** संक्रमित भेड़ों में सुस्ती, कमजोरी और पीड़ा होती है। ये ठीक से ना खा पाती हैं और उनकी शारीरिक स्थिति खराब हो जाती है एवं इन्हें चलने में भी कठिनाई हो सकती है।
- **श्वास की समस्या:** भेड़ों में श्वसन समस्या भी हो सकती है जैसे कि खांसी, नजला और श्वास लेने में तकलीफ।
- **आंखों में पानी आना:** संक्रमित भेड़ों की आंखों में पानी आ सकता है और कभी-कभी आंखों के चारों ओर सूजन भी आ सकती है।
- **घाव और संक्रमण:** त्वचा पर उत्पन्न होने वाले फफोलों के बाद घाव उत्पन्न होते हैं जो धीरे-धीरे सूखने के बाद स्कार बन सकते हैं।

उपचार: भेड़ की चेचक का कोई विशिष्ट इलाज नहीं है, लेकिन इसके लक्षणों को नियंत्रित करने के लिए निम्नलिखित उपचार दिये जा सकते हैं:

- बुखार कम करने के लिए दवाएं जैसे- एंटीबायोटिक्स (पैरासिटामोल)
- एंटीबायोटिक्स का उपयोग
- घावों और फफोलों का उपचार।
- संक्रमित भेड़ों को उचित पानी और पोषण देना चाहिए ताकि वे जल्दी स्वस्थ हो सकें।

बचाव: भेड़ की चेचक को रोकने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

- **टीकाकरण:** भेड़ों का नियमित टीकाकरण एक प्रभावी उपाय है जिससे इस रोग से बचाव किया जा सकता है।
- संक्रमित भेड़ों को स्वस्थ भेड़ों से अलग रखना चाहिए।
- भेड़ों के बाड़े और उनके आसपास के क्षेत्र को साफ रखना चाहिए। नियमित रूप से सफाई और कीटाणुरहित करना बहुत महत्वपूर्ण है।
- यदि बाड़ों में अधिक संक्रमण है तो स्वास्थ्य नियमों का पालन करना चाहिए।

हाल ही में इस बीमारी से बचाव के लिए भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान इज्जतनगर, बरेली (IVRI) के वैज्ञानिकों ने पीपीआर और शीप पॉक्स की ज्वाइंट वैक्सीन तैयार की है, जिससे इस बीमारी से बचाव के लिए अब दो नहीं बल्कि एक ही टीका लगवाना पड़ेगा जो कि 4 साल तक काम करेगा।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

मुर्गीपालन को दिया व्यवसाय का रूप बदले आर्थिक हालात

कलीम मोहम्मद टोंक जिले में मालपुरा पंचायत समिति से 10 किलोमीटर दूरी पर स्थित चांदसेन गांव के निवासी हैं। उनके समुदाय में कृषि भूमि की उपलब्धता बहुत कम या ना के बराबर होने के कारण ज्यादातर लोग मजदूरी से अपना जीवनयापन कर रहे हैं। कलीम मोहम्मद ने इन सबसे अलग हटकर अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू करने की सोची और अपने निवास स्थान पर ही केवल 05 मुर्गियों से बैकयार्ड मुर्गीपालन करने लगे। शुरुआत के दिनों में कलीम मोहम्मद को मुर्गियों के रखरखाव, देखभाल एवं पोषण के बारे में अधिक जानकारी नहीं होने के कारण थोड़ी परेशानी होती थी, परन्तु पशु विज्ञान केन्द्र, अविकानगर, टोंक से संपर्क करने पर धीरे-धीरे वे बैकयार्ड मुर्गीपालन के पहलू समझने लगे। व्यवसाय में होते हुए मुनाफे को देखकर कलीम मोहम्मद का मन इस व्यवसाय में लगने लगा वे नित-रोज अपने इस व्यवसाय को आगे बढ़ाने के बारे में सोचने लगे और पशु विज्ञान केन्द्र, अविकानगर, टोंक से उन्नत मुर्गीपालन का प्रशिक्षण प्राप्त कर मुर्गी की देशी नस्लों की बैकयार्ड मुर्गीपालन इकाई की स्थापना की। उन्होंने घर के पीछे खाली जगह पर एक शेड बनाकर 50 देशी मुर्गियां लाकर व्यवसाय को व्यवसायिक दृष्टि से प्रारम्भ किया और अण्डे और मांस को बेचकर अपनी आजीविका चलाने लगे। समय बीतने के साथ-साथ और पशु विज्ञान केन्द्र, अविकानगर, टोंक के लगातार मार्गदर्शन में उनका एक अच्छा व्यवसाय शुरू हो गया। वर्तमान में 40 रु. प्रति अण्डा बेचते हैं और उनके पास प्रतिदिन 20-25 अण्डों का उत्पादन होता है। कलीम मोहम्मद ने अपने इस छोटे से व्यवसाय के दम पर प्रथम वर्ष लगभग 50,000 रु. की आय प्राप्त की। इसके अलावा इनके पास 05 गायें व 05 बकरियां भी हैं और ये भी उनकी और उनके परिवार की आजीविका चलाने में सहायक सिद्ध हो रही हैं। आज कलीम मोहम्मद गांव के युवाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत बन गये हैं। वे पशु विज्ञान केन्द्र, अविकानगर, टोंक के नियमित सम्पर्क में रहते हुए पशुपालन की नवीन तकनीकों की जानकारी प्राप्त करते रहते हैं।



सम्पर्क-कलीम मोहम्मद,
गांव चांदसेन जिला टोंक (6375947999)



सर्दी के मौसम में पशुओं के लिए विशेष आहार अति आवश्यक

सर्दी के मौसम में पशुओं के रहन-सहन और उसके आहार का समुचित प्रबंधन करना नितांत आवश्यक है, यदि इस मौसम में पशुओं के आहार का विशेष प्रबंधन नहीं किया जाये तो पशुओं के स्वास्थ्य एवं दुग्ध उत्पादन पर कुप्रभाव पड़ सकता है। ऐसे में पशुपालकों को अपने दुधारू पशु जैसे गाय, भैंस व उनके बच्चों की मौसम अनुरूप देखभाल के साथ उनके आहार पर विशेष ध्यान देना चाहिए। पशुपालक को अपने पशुओं को उचित संतुलित आहार देना चाहिए। सर्दी के मौसम



में पशुओं को शरीर का तापमान बनाये रखने के लिए ऊर्जा, प्रोटीन व अन्य पोषक तत्वों की आवश्यकता बढ़ जाती है। बर्फवारी व शीतलहर की स्थिति में पशुओं की ऊर्जा की आवश्यकता 100 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। शरद ऋतु में पशुओं को अतिरिक्त आहार पशुओं की नस्ल, उम्र, शारीरिक अवस्था जैसे गर्भकाल, दुग्धकाल, शुष्क काल और प्रबंधन के अनुसार देना चाहिए। पशुपालक को अपने पशुओं को संतुलित आहार देना चाहिए जिसमें ऊर्जा, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स, वसा, खनिज लवण व विटामिन आदि पोषक तत्व उचित मात्रा में उपलब्ध हो। सामान्यतया देशी पशुओं को प्रतिदिन 8-10 किलो आहार की जरूरत होती है। संकर नस्ल की गायों को प्रति दिन 10-12.5 किलो आहार की आवश्यकता होती है। सर्दियों में दाना-मिश्रण की भी अतिरिक्त मात्रा देनी चाहिए। अच्छी गुणवत्ता का सूखा चारा जैसे जई, रिजका, सीवणघास, कडवी, गेहूँ की तुड़ी इत्यादि के साथ-साथ उच्च पाचकता गुणांक वाला चारा पशुओं को देना चाहिए। पशुओं को दिये गये रेशेदार आहार दूध में वसा प्रतिशत बढ़ाने में सहायक होते हैं। हरे चारे में जई, सरसों चरी, लोबिया, रिजका या बरसीम आदि शामिल करना चाहिए। प्रोटीन के लिए कपास, मूंगफली, तिल या सरसों की खल या मूंग-मोठ, ग्वार की चूरी भी देनी चाहिए। दाना मिश्रण में मोटे तौर पर दाना-40 प्रतिशत, खल-32 प्रतिशत, चापड़-25 प्रतिशत, खनिज लवण-2 प्रतिशत व नमक-1 प्रतिशत मिलाकर देना चाहिए। अधिक दूध उत्पादन के लिए भैंस को प्रति 2 किलो दूध पर 1 किलो सान्द्र आहार अतिरिक्त देना चाहिए। अधिक दूध उत्पादन के लिए पशुओं को साइलेज भी देना चाहिए। सर्दी के मौसम में पशुओं के आहार प्रबंधन के साथ-साथ पशुओं के आहार की मात्रा को धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए क्योंकि एक साथ अधिक आहार देने पर पशु का पाचन खराब हो सकता है। साथ ही पशुओं को दलहनी हरा चारा अधिक नहीं खिलाना चाहिए अन्यथा पशु को आफरे की शिकायत हो सकती है। पशु के बाड़े को भी साफ-सुथरा रखना चाहिए तथा सर्दी से बचाने के लिए भी आवश्यक प्रबंधन करना चाहिए। इस प्रकार शरद ऋतु पशुपालक पशुओं के आहार का उचित प्रबंधन कर अधिक दूध उत्पादन ले सकते हैं।

प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

“ धीणे री बात्यां ”

**पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी
केन्द्रों से प्रसारण**



**पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी
प्राप्त करने के लिए**

**टोल फ्री हैल्पलाइन
1800 180 6224**

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच

संपादक

डॉ. दीपिका धूड़िया

डॉ. मनोहर सैन

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

☎ 0151-2200505

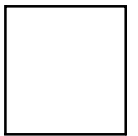
email : deerajuvass@gmail.com

**पत्रिका में प्रकाशित आलेख/
विचार लेखकों के अपने हैं।**

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में



स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच